डाल्टन विधि :-

इस विधि का प्रयोग भूगोल-शिक्षण में किया जाता है। शिक्षक छात्रों का मार्ग-निर्देशन करता है और बालक स्वयं अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। बालकों की कठिनाई दूर करने में अध्ययन करना पड़ता है। छात्रों का व्यक्तिगत ध्यान रखकर शिक्षा दी जाती है और प्रत्येक बालक को अपनी शक्तियों के अनुरूप प्रगति करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

कक्षाओं के पाठ्यक्रम का विभाजन कर लिया जाता है। पहले वर्ष 40 मिनट के दो घण्टे अध्यापन के और दो घण्टे छात्रों द्वारा स्वतः अध्ययन के रखे जाते हैं। दूसरे तथा अन्य वर्षों में भूगोल और इतिहास दो-दो महीने पढ़ते हैं। इनमें से दो घण्टे अध्यापन और चार घण्टे प्रति सप्ताह स्वतः अध्ययन के लिए रखे जाते हैं। इन चार घण्टों में से दो घण्टे पुस्तकालय में स्वाध्याय के लिए देते हैं। शेष दो घण्टे पाठशाला या घर पर अध्ययन में लगाये जाते हैं। कक्षा 6 में दो घण्टे और दूसरे वर्ष में चार घण्टे प्रति सप्ताह भूगोल के लिए पर्याप्त होंगे।

वार्षिक पाठ्य-सामग्री को सुविधानुसार कई भागों में विभक्त कर लेते हैं। प्रत्येक भाग ऐसा होता है कि इसमें चार या पाँच सप्ताह के अध्ययन की सामग्री होती है। छोटी कक्षाओं में केवल एक सप्ताह की यह सामग्री होती है। छोटी कक्षाओं में केवल एक सप्ताह की यह सामग्री होती है। सप्ताह आरम्भ होते ही यह कागज प्रत्येक बालक को दे दिया जाता है।

छात्रों के स्वतः अध्ययन पर अधिक महत्व दिया जाता है और शिक्षक व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करता है तथा पढ़ने का निर्देशन करता है। जो छात्र अपना कार्य शीघ्र समाप्त कर लेते हैं, उन्हें शिक्षक अगले सप्ताह का कार्य आरम्भ करने की आज्ञा देता है। शेष छात्र जो कार्य समाप्त नहीं कर पाते हैं

वही कार्य करते रहते हैं। छात्र अपने बौद्धिक विकास की अनुकूल गति से अध्ययन करते रहते हैं। छात्र ~~अपने बौद्धिक विकास का~~ कार्य समाप्त हो जाने पर उसे कमरे के बाहर जाने की स्वतन्त्रता रहती है, चाहे अन्तर पूरा हो या नहीं। स्वतः अध्ययन तथा स्वतन्त्र अध्ययन का सम्मिश्रण होना चाहिए।

शिक्षक को कक्षा में अध्ययन का उचित वातावरण बनाना चाहिए तथा छात्रों के कार्य का निरीक्षण, निर्देशन एवं मार्ग-प्रदर्शन करना चाहिए। कभी-कभी उसे अध्यापन-कार्य की भी आवश्यकता होती है और कुछ बातों का पुनरावलोकन भी करना पड़ता है।

इस प्रणाली में छात्र स्वतन्त्र अध्ययन के लिए समय प्राप्त करते हैं। प्रत्येक छात्र अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करता है। दुर्बल बुद्धि वाले छात्र अपनी मन्द गति से कार्य कर सकते हैं तथा तेज बुद्धि वाले छात्रों के साथ पढ़ने का व्यर्थ प्रयास नहीं करना पड़ता है। छात्र स्वयं अपना निष्कर्ष निकालते तथा ज्ञानार्जन करते हैं जो स्थानीय होता है। छात्र आपस में सहयोग से कार्य करते हैं।

इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है कि छात्रों में अनुशासन तथा सहकारिता की भावना हो जिससे निश्चित कार्य समाप्त करने में अधिक समय न लगे। शिक्षक छात्रों के अध्ययन की प्रगति का विवरण अपने पास रखता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2-10-2020